शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव

फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन विषय में पी.एच.डी. उपाधि की

आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

ज्योति

निर्देशिका

प्रो0 डी0 वसन्ता

फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, विभाग शिक्षा-संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),

दयालबाग, आगरा - 282005

2022

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली जो सम्पूर्ण विश्व में विख्यात थी, उस शिक्षा का मुख्य लक्ष्य ''सा विद्या या विभुक्तयेत'' और ''विद्या धनं सर्वधन प्रधानम्'' मानते थे। प्राचीन सर्वोच्च शिक्षण प्रणाली में हुए दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों के कारण शिक्षा का संख्यात्मक विकास समय के अनुसार बढ़ता गया, लेकिन शिक्षा में गुणवक्ता का आभाव समय-समय पर प्रकट हो रहा है। शिक्षा में गुणवक्ता लाने के लिए सरकार एवं राष्ट्रीय संस्थाएँ, सर्वशिक्षा अभियान, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, शिक्षण विधियाँ, अनुदेशात्मक रणनीतियों एवं सम्प्रेषण तकनीकी आदि से विद्यालयी शिक्षा में गुणवक्ता लाने की कोशिश जारी है। स्कूलिंग की बजाय ज्ञानार्जन पर बल देकर विद्यालयी शिक्षा को गुणवक्ता पूर्ण एवं विश्वसनीय बनाना होगा, विद्यालयी शिक्षा में गुणवक्ता एवं सुधार लाने हेतु कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता है जैसे- अध्यापक प्रशिक्षण, कक्षा-कक्ष शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन, नवीन अधिगम तकनीकियाँ आदि। छात्राओं को रटन विद्या से दूर विषय-वस्तु ज्ञान संचित करने के लिए नये शिक्षण उपागमों का प्रयोग शिक्षण में आरम्भ करना होगा। शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रियाओं को रूचिकर बनाने के लिए विभिन्न विषयों को विभिन्न कलाओं और संस्कृति से एकीकृत करके शिक्षण देने पर छात्राओं में तर्क, विश्लेषण, कल्पना शक्ति, एकाग्रता, रूचि एवं सृजनात्मकता का विकास होगा। कुछ सामुहिक क्रियाओं के आयोजन अपनी मातृभाषा या राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से करने पर, चर्चा, बातचीत या विश्लेषण करके जीवन से सम्बन्धित गतिविधियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संलग्न करने पर छात्राओं की संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ छात्राओं में स्मृति, ध्यान, प्रेरणा, रूचि एवं सृजनात्मकता का विकास होता है। एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित अधिगम परिणामों में हिन्दी भाषा शिक्षण में अभिनय, रोलप्ले, कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन आदि क्रियाओं को कल्पना शक्ति और सृजनात्मकता को विकसित करने का सुझाव दिया, किसी घटना का वर्णन या अनुभवों को व्यक्त करने हेतु हर व्यक्ति भाषा शैली पर निर्भर होते है। जिससे भाषा प्रयोग में होने वाली त्रुटियों को दूर करके व्यवस्थित भाषा का प्रयोग लिखने, पढ़ने एवं सम्प्रेषण में किया जा सकता हैं। स्वच्छ एवं स्पष्ट भाषा में शब्दों को व्यक्त करने

हेतु व्याकरण का ज्ञान अति आवश्यक है। व्याकरण को सीखना या सिखाना कठिन कार्य हैं क्योंकि व्याकरण के नियमों को पढ़ने एवं समझने में छात्राएं बहुत बोझीला एवं बोरिंग समझती है।

भाषा व्यक्तिकरण में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों को शुद्ध करना, वर्तमान तकनीकी युग में छात्राओं के लिए कठिन होता जा रहा है क्योंकि छात्राएं उदाहरण या प्रारूप के अनुसार व्याकरण के अभ्यास कार्य यान्त्रिक रूप से करती हैं। भाषा में शुद्धता लाने हेतु व्याकरण शिक्षण को मनोरंजक एवं रूचिकर बनाने की आवश्यकताओं को नजर में रखते हुए कला एकीकृत शिक्षण/अनुदेशन रणनीतियों को कक्षागत शिक्षण में शामिल करने के लिए एनसीईआरटी, एनसीएफ 2005, 2008, नई शिक्षा नीति 1986, 2020 आदि ने सुझाव दिये। कक्षागत शिक्षण को शिल्प केन्द्रित शिक्षा से जोड़कर पढ़ाने का प्रस्ताव महात्मा गांधीजी ने वर्धा शिक्षा प्रणाली में दिया था। इस शिक्षा प्रणाली का अर्थ शिक्षा को हस्तकलाओं से सम्बन्धित हो जिससे छात्र पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए अपनी योग्यतायें, गुण एवं संस्कृति का विकास करें और यह शिक्षा हस्तशिल्प और उत्पादन कार्य पर निर्भर हो। यही प्रणाली वर्तमान शिक्षा में समाज उपयोगी उत्पादन कार्य (एसयूपीडब्ल्यू), कार्य अनुभव, व्यवसायिक कोर्स, कला केन्द्रित पाठ्यक्रम, कोर पाठ्यक्रम आदि के लिए बुनियाद करार कर दिया था। हिन्दी व्याकरण के विभिन्न सूत्रों को पढ़ाने में छात्राओं में नीरसता उत्पन्न होती है क्योंकि इस प्रक्रिया में छात्राएं निष्क्रिय होती है, व्याकरण शिक्षण को क्रिया प्रधान एवं कला केन्द्रित अनुभवों से परिपूर्ण बनाने पर छात्राएं अपने समूहों में या व्यक्तिगत रूप से यह क्रियायें निर्देशों के अनुसार करते हुए व्याकरण शिक्षा में निपुण हो सकती है। कला केन्द्रित शिक्षा में व्याकरण शिक्षण से छात्राओं में ज्ञान संवर्धन के साथ-साथ उनकी कलात्मक प्रवृत्तियों एवं सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है। कला केन्द्रित शिक्षा द्वारा हिन्दी व्याकरण शिक्षा प्रदान करने हेतु गायन, वादन, नृत्य, चित्रकला, नाटक, कठपुतली, मिट्टी का कार्य एवं क्राफ्ट की सहायता से नीरसता पूर्ण, अरूचिकर समस्यात्मक एवं बोझीला हिन्दी व्याकरण को रूचिकर एवं सृजनात्मक बनाया जा सकता है।

गांधीजी ने शिक्षा को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए कहा कि शिक्षा से मेरा अर्थ मानव या बालक के शरीर, आत्मा और मन मस्तिष्क का चहुमुखी विकास, वे बालक के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और

मानसिक विकास का आधार शिक्षा को मानते थे, महात्मा गांधी जी द्वारा प्रस्तावित इस शिक्षा प्रणाली को बुनियादी शिक्षा कहा जाता है जिसके उद्देश्य निम्न प्रकार दिये गये है।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएं-

- बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम 7 वर्ष की अवधि का था।
- इसमें 7 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की बात कही गयी।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होगा, मगर हिन्दी भाषा सभी के लिए अनिवार्य रहेगी।
- बुनियादी शिक्षा का आधार शिल्प था।
- शिल्प शिक्षा के माध्यम से बालकों को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य थे।
- शिल्प शिक्षा में सामाजिक एवं वैज्ञानिक शिक्षण को महत्व दिया जाए।
- शारीरिक श्रम को महत्ता।
- यह शिक्षा बालक के परिवेश उनके गाँव और शिल्प उद्योग से घनिष्ठ सम्बन्धित हो।
- बालक स्वयं निर्मित उत्पाद का विक्रय कर विद्यालय पर व्यय कर सके।
- लड़के तथा लड़कियों के लिए समान पाठ्यक्रम की व्यवस्था।
- कक्षा 6 और 7 में पढ़ने वाली बालिकाएं बेसिक शिल्प से गृह विज्ञान ले सकती हैं।

शिल्प की परिभाषा-

शब्द ‘‘शिल्प’’ का तात्पर्य एक ऐसी गतिविधि से है जिसमें किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए हस्तनिर्मित ठोस वस्तुओं का निर्माण करने में कौशल और अनुभव शामिल होते है। इसे उन वस्तुओं के उत्पादन के रूप में परिभाषित किया गया है, जो लोगों के लिए उपयोगी होते है। उपयोग के आधार पर उद्देश्य सजावटी या कार्यात्मक दोनों हो सकते है।

शिल्प मन का एक उत्पाद है; जो लोगों को आकर्षित करता है। यह एक सीखी हुई क्षमता है, जिसे किसी व्यक्ति द्वारा नियमित अभ्यास के माध्यम से हासिल किया जाता है। इसमें हाथ से बनी चीजें जैसे चिड़िया

घर, चटाई, बुनी हुई टोकरी, कढ़ाई, कम्बल, हैंडबैग, मोमबत्तियाँ, आभूषण, मिट्टी के बर्तन, कांच का काम, कागज से शिल्प कार्य करना इत्यादि शामिल हैं।

शिल्प शिक्षा का महत्व- हिन्दी व्याकरण के पाठों में कला और शिल्प कला का उपयोग करने के लिए एवं रूचि बनाए रखने के लिए गतिविधि के प्रकार में बदलाव करना आवश्यक है। शिक्षार्थियों के साथ अपनी कक्षा में विभिन्न शिक्षण शैलियों को पूरा करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि सीखने के उद्देश्य को खोए बिना कक्षा में कला और शिल्प को एकीकृत करना, शिक्षार्थी शैलियों की एक श्रृंखला को पूरा करने के लिए सभी बच्चों को शिल्प गतिविधियों के लिए सफलतापूर्वक निर्देश देना, समय कुशलता के अनुसार शिल्प गतिविधियों के लिए एक संगठित दृष्टिकोण रखने पर विचार करना, जिससे कि वह अपने कार्य को प्रभावशाली ढ़ग से प्रस्तुत कर सकें।

शिल्प शिक्षा के लाभ- शिल्प शिक्षा रचनात्मक उत्तेजना और आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम से सिद्धान्तों और नीरस शिक्षा के बीच संतुलन बनाती है। यह भारतीयों की जरूरतों को पूरा करने वाले सामाजिक रूप से सार्थक कार्यों के माध्यम से शारीरिक और बौद्धिक कौशल के बीच भेदभाव और पूर्वाग्रहों को कम करने में मद्द करता है।

क्रो एस बेर्गेन अन्य, (2020) एनरिचिंग मैथमेटिक्स एजुकेशन विद विजुअल आर्ट्सः इफेक्ट्स ऑन एलीमेट्री स्कूल स्टूडेन्ट्स एबिलिटी इन ज्योमेट्री एण्ड विजुअल आट्स। विधि के रूप में प्रयोगात्मक विधि का चयन किया गया। न्यादर्श 72 को लिया गया। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान मानक विचलन और टी परीक्षण को लिया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि जिन छात्रों ने मैस (मैथमेट्क्सि आर्ट एंड क्रेरेटेविटी) पाठ श्रृखला प्राप्त की ये उन छात्रों की तुलना में अधिक बेहतर हुए, जिन्होंने केवल दृश्य कलाकृति देखी तथा ज्यामितीय विषय के नियमित पारंपरिक पाठ प्राप्त किया।

दुर्मुस एण्ड बॉस (2019) द इफेक्ट ऑफ टीचिंग सोशल स्टडीज कोर्स थ्रू परफार्मिंग आट्स ऑन द स्टूडेट्स एकेडेमिक अचीवमेट एड परमेनेन्स ऑफ देयर नॉलेज। इन्होने अपनी स्टडी में अर्द्ध प्रयोगात्मक विधि का

प्रयोग किया। न्यादर्श के रूप में 250 छात्रों को सम्मिलित किया। प्रदत्त आंकडों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और टी - परीक्षण, एसपीएसएस का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित गतिविधियों की तुलना में प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से सामाजिक अध्ययन शिक्षण गतिविधियाँ छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में अधिक सफल रही।

सुधीर पं. (2019) ने सी.बी.एस.ई. द्वारा जारी सर्कुलर 2019 के अनुसार "आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग क्लासरूम को आनंदमय और रचनात्मक बनाता है। यह हमारी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत की सराहना को भी बढ़ावा देता है। सी.बी.एस.ई. ने कक्षा 1 से 12 तक सभी शैक्षणिक विषयों की शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के साथ कला को एकीकृत करने का फैसला किया गया।"

सोंग, वाई. आई. के. (2018) ने अपने अध्ययन फोस्टरिंग कल्चरली रेस्पोन्सिव स्कूल: स्टूडेन्ट आइडेन्टिटी डेवलपमेंट इन क्रॉस कल्चरल क्लासरूम परिणाम में पाया गया कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षणिक क्रियाकलाप अत्यंत सफल सिद्ध होते है।

अमिता शुक्ला ने (2018) कला व्यवसायों के उन्नयन में लोककला की भूमिका पर अध्ययन किया। जिसमें उत्तर प्रदेश के हस्तशिल्प में लोककला प्रयोग के बारे में बताया कि - उत्तर प्रदेश हथकरघा व हस्तशिल्प को किसी भी सभ्यता का झरोखा कहा जा सकता है। हथकरघा जहॉ भारतीय संस्कृति का ताना-बाना बुनता है वहीं हस्तशिल्प उसमें रंग भरता है। यह सांस्कृतिक विरासत कमोवेश देश के हर गॉव की जिंदगी में रची बसी है। गॉधी जी ने एक बार कहा था कि असली भारत गॉवों में बसता है। आज हमें उस भारत को विकसित करने के लिए हस्तशिल्प व हथकरघा को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। क्योंकि यहॉ के लोगों में कलात्मकता की अभिरुचि देखने को मिलती है। कहा जाता है कि भारत हस्तशिल्प और हथकरघों का देश है।

लिंडा ई. कराकौर, 2017 आर्टस एन्टीग्रेशन फॉर अन्डरस्टेनडिंगः डिपेंटिंग टीचर प्रैक्टिस इन एण्ड थ्रू द आर्टस पर अध्ययन किया। अध्ययन के लिए प्रयोगिक विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के न्यादर्श के रूप में 50 शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चयन किया। परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए मध्यमान, प्रतिशत एवं काई-वर्ग

परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष- आर्टस एन्टीग्रेशन के द्वारा अध्यापकों की समझ को बढ़ाया जा सकता है।

एन्ड्रल एवं शिथिम (2016) ने अपने अध्ययन 'स्टूडेन्ट्स परसेप्शन ऑफ सक्सेस इन आर्ट क्लासरूम' में यह जानने का प्रया किया गया कि कला शिक्षण का विद्यार्थियों के अंग्रेजी विषय पर क्या प्रभाव होता है? शोध के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के 15 छात्र/छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रस्तुत परिणामों से स्पष्ट होता है कि कलात्मक अनुदेशन द्वारा बालकों में व्यक्तिगत संवद्धर्न को बल मिलता है।

रसल (2014) ने अपने शोध पत्र 'वुम्बेट स्टू: एनहांसिंग सेल्फ कॉन्सेप्ट थ्रू एन इन्टिग्रेटेड आर्ट प्रोजेक्ट' के माध्यम से यह तर्क दिया कि कलागत अनुभव बालकों में रचनात्मक अधिगम दैनिक जीवन में उपयोगी कौशलों का प्रयोग तथा आत्म-प्रत्ययों के विकास में प्रभावशाली होते हैं। शोध अध्ययन के अर्न्तगत पश्चिमी सिड़नी, आस्ट्रेलिया के कक्षा 5, 6, के 8, से 12 वर्ष के बालकों को चुना गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि आर्ट प्रोजेक्ट क्रिएटिव आर्ट्स ग्रुप के बालकों के आत्म-प्रत्यय को विकसित करने में सफल रहा।

हुसैन एवं हुसैन (2013) ने 'द यूज ऑफ सोशल नेटवर्किंग साइट्स इन एजुकेशन: अकेस स्टड़ी ऑफ फेसबुक' नामक अपने अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया कि युवाओं में अत्याधिक लोकप्रिय सोशल साइट्स और वेब 2 टूल का शैक्षणिक दृष्टि से प्रयोग करने पर क्या सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं तथा शिक्षक ऑनलाइन अधिगम के सन्दर्भ में किस प्रकार के अभिमत रखतें हैं। परिणामों में प्राप्त हुआ है कि दोनों समूहों के शिक्षक शैक्षणिक कार्यों के लिए फेसबुक की उपयोगिता को एकमत से स्वीकार करते हैं। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को मनोरंजक व फलदायक बनाने हेतु फेसबुक व उस जैसी अन्य सोशल साइट्स का सर्मथन करते हैं।

बर्जर एवं विनर (2010) द्वारा एक अध्ययन सम्पादित किया गया जिसका शीर्षक 'साइन्स इन विजुअल आर्ट: कैन इट हेल्प चिल्ड्रन लर्न टू रीड़' था। शोध को जाँचने के लिए मेटा विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह भी ज्ञात होता है कि दृश्य कला द्वारा दिये गये विज्ञान प्रयोग अधिगम स्थानान्तरण में प्रभावी होते है।

मैककैन, (2010) ने कला एकीकरण में विश्वविद्यालय स्तर के व्यावसायिक विकास कार्यक्रम के प्रभाव पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 150 शिक्षाणिर्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया। उनके द्वारा माध्य, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि कला एकीकरण का व्यावसायिक विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

शिल्प एक ऐसी गतिविधि है जो हाथ से बनाने के कौशलों का विकास करती है। शिल्प आधारित शिक्षा द्वारा छात्राओं की अतंर्निहित शक्तियों को रचनात्मक, मनोरंजनात्मक एवं सृजनात्मक क्रियाओं द्वारा हाथ से बनाकर छात्राएं स्वयं के कौशलों के साथ-साथ कल्पना शक्ति का भी विकास करती हैं।

हिन्दी व्याकरण शिक्षा को किन-किन गतिविधि के द्वारा पढ़ाया जा सकता है-

छात्राओं को व्याकरण शिक्षण हेतु निम्न शिल्प आधारित रणनीतियों का प्रयोग करते हुए उन रणनीतियों का प्रभाव का अध्ययन छात्राओं की संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता पर देखेंगे।

तालिका सं.-1 शिल्प आधारित रणनीतियाँ

क्र. सं.	अध्याय	शिल्प आधारित रणनीतियाँ
1.	विराम चिन्ह	पेपर क्राफ्ट (शिल्प कागज), क्ले (मृत्तिक कला), ओरिगामी (सजावटी आकृति), क्विलिंग (गुथना)
2.	संधि	ओरिगामी (सजावटी आकृति), स्क्रेपबुक (कतरन रजिस्टर), क्विलिंग (गुथना), वीविंग (बुनाई), पेपर क्राफ्ट (शिल्प कागज), एम्ब्रॉइडरी (कढ़ाई), कैलीग्राफी (सुलेख),
3.	उपसर्ग-प्रत्यय	पपेट (कठपुतली)
4.	मुहावरे	ओरिगामी (सजावटी आकृति)
5.	समास	पेपर क्राफ्ट (शिल्प कागज), कैलीग्राफी (सुलेख), हैन्डि क्राफ्ट (हस्तकला), ओरिगामी (सजावटी आकृति), क्ले (मृत्तिक कला), पेपर मेशी (मसला हुआ कागज), पपेट (कठपुतली),
6.	विलोम शब्द	स्क्रेपबुक (कतरन रजिस्टर), ओरिगामी (सजावटी आकृति)
7.	अलंकार	हैन्डि क्राफ्ट (हस्तकला), कैलीग्राफी (सुलेख), ओरिगामी (सजावटी आकृति)

हिन्दी व्याकरण

हिन्दी व्याकरण का निर्माण छात्राओं को व्याकरण सीखने, समझने, बोलने, लिखने का कौशल और उचित क्रम को व्यवस्थित करने का ज्ञान प्रदान किया जाता है। क्योंकि विद्यार्थी व्याकरण को जटिल, बोझल एवं नीरस

समझकर उससे परेशान हो जाते है, अतः आवश्यक है कि व्याकरण की प्रस्तुति सरल एवं बोधगम्य होने के साथ-साथ सुरूचि पूर्ण होनी चाहिए। जिसे छात्राएं आसानी से सीख सकें।

संज्ञानात्मक क्षमता

संज्ञानात्मक क्षमता को लंबे समय से व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। संज्ञानात्मक क्षमता मानसिक प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए योग्यता को संदर्भित करती है, जैसे समस्या-समाधान, अनुकूलन, समझ, तर्क, ज्ञान, अधिग्रहण, अमूर्त विचार और संबंध बनाना (फ्लेवेल 1999), शिक्षा में, संज्ञानात्मक क्षमता को सीखने का आधार माना जाता है। (रीफ 2008), इसके अलावा, संज्ञानात्मक क्षमता कई शैक्षिक परिणामों में सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि की तुलना में बहुत अधिक भूमिका निभाती है, जिसमें छात्र प्रदर्शन, विश्वविद्यालय प्रवेश और पूर्णता और समग्र शैक्षिक प्राप्ति शामिल है। (जेनक्स एट अल 1979; मार्क्स 2013)

डीन कैंथ सिमटोन 2021 द ब्लाइंड-वेरिएशन एंड सेलेक्टिव-रिटेंशन थ्योरी ऑफ क्रिएटिव एविलिटी: रिसेट डेवलपमेन्ट एण्ड करेन्ट स्टेट्स ऑफ बीवीएसआर पर एक लेख लिखा। बीवीएसआर की वैचारिक नींव में संवर्द्धन का अधिक व्यापक सारांश दिया गया है, जिसमें रचनात्मक, दृष्टिहीन और अंधे विविधताओं की औपचारिक परिभाषाएं शामिल हैं। इन संबदर्धन से पता चलता है कि बीवीएसआर व्यक्तिगत रचनात्मकता (यानी, मौलिकता, उपयोगिता और आश्चर्य के गुणक कार्य) की तीन -मानदंड परिभाषा के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में अनुसरण करता है।

केविन एस मैकग्रे, डॉन पी, फ्लैनगन, टिमोथी जेड कीथ और माइक वेंडरवुड 2019 ने बियॉन्ड जीः द इंपैक्ट ऑफ जीएफ-जीसी स्पेसिफिक कॉग्निटिव एबिलिटी रिसर्च ऑन द फ्यूचर यूज एंड इंटरप्रिटेशन ऑफ इंटेलिजेंस टेस्ट इन स्कूलों। इसको 222 से 255 न्यादर्श के रूप में लिया गया है। विद्यालय की उपलब्धि को समझाने में सामान्य और विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षमताओं दोनों के सापेक्ष महत्व की पुनः जांच करने के लिए नए शोध की

आवश्यकता है। जी और सात जीएफ-जीसी विशिष्ट क्षमताओं, सामान्य, विशिष्ट पढ़ने और गणित कौशल के बीच संबंधों की जांच करने वाले अध्ययनों के एक समूह के परिणामों का सारांश प्रस्तुत किया गया है।

जीआर सिंन्हा, सरूजन कोटागिरी राजू, राजकुमार पत्रा (2018) रिसर्च स्टडी ऑन हुमन कॉगनेटिव अविलिटी, का अध्ययन किया। जिसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इसमें कृत्रिम बुद्धि (एआई) आधारित अनुप्रयोगों के लिए मानव मस्तिष्क अनुसंधान और संज्ञानात्मक क्षमता पर प्रभाव की तुलना। शोध अध्ययन मशीन सीखने और संज्ञानात्मक क्षमता के प्रभाव पर महत्वपूर्ण प्रश्नों का परिणाम हैं।

किझू, यियिंग सॉन्ग, सियुआन हू, शियोओबाई ली मोकियानतियान, जांगलेइ जेन, क्यूडोंग नैन्सी, कन्विशरजियालिउ 2018 हैरिटेविलिटी ऑफ द स्पेसिफिक कोगनिटिव एविलिटी ऑफ फेस परसेपसन पर अध्ययन किया। जिसमें न्यादर्श के रूप में 100 लोगों को शामिल किया। जिसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। चेहरे की धारण की विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षमतता की आनुवंशिकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

जेके हार्टशोर्न, 2015 ने संज्ञानात्मक कार्य कब चरम पर होता है? जीवन भर विभिन्न संज्ञानात्मक क्षमताओं का अतुल्यकालिक उत्थान और पतन का अध्ययन करना, यह समझना कि जीवन काल में संज्ञानात्मक परिवर्तन कैसे और कब होता है, 48,537 ऑनलाइन प्रतिभागियों से अभिसरण साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं और मानकीकृत आईक्यू और स्मृति परीक्षणों से मानक डेटा का व्यापक विश्लेषण करते है। ये निष्कर्ष परिपक्वता और उम्र से संबंधित गिरावट के एक सूक्ष्म सिद्धान्त को प्रेरित करते हैं, जिसमें कई, अलग-अलग कारक अनुभूति के विभिन्न डोमेन को अलग-अलग प्रभावित करते हैं।

बुब के. एल. एम सी कार्टने, के एण्ड विलेट, जे. बी. (2010) विहेवियर प्रोब्लम ट्राजेक्टोरिस एण्ड फस्ट ग्रेड कोगनिटिव एविलिटी एण्ड अचीवमेन्ट स्केलः ए टेलेन्ट गिरोथ करव एनालयिस। निष्कर्ष में तीन स्तर पर रखा गया है। सबसे पहले, 24 महीने और पहली कक्षा के बीच व्यवहार की समस्याओं में अंतर-व्यक्तिगत और अंतर-व्यक्तिगत परिवर्तनशीलता दोनों का प्रमाण था। दूसरा, 24 महीनों में आंतरिक और बाहरी व्यवहार के उच्च प्रारंभिक स्तर वाले बच्चों में पहली कक्षा में कम संज्ञानात्मक क्षमता और उपलब्धि स्कोर थे। अंत में,

समय के साथ आंतरिक व्यवहार में अधिक तेजी से वृद्धि वाले बच्चों में पहली कक्षा में कम संज्ञानात्मक क्षमता स्कोर थे।

पैट्रिक रैबिट, मैरी लिन, डैनी वोंग, मार्क कोबेन 2008 संज्ञानात्मक परिवर्तन के अनुदैर्ध्य में आयु और क्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना। शोधकर्ताओं ने 5842 स्वयंसेवकों का एक नमूना भर्ती किया। साख्यिकी के रूप में माध्य, एसडी का प्रयोग किया। परिणाम के आधार पर पाया गया संज्ञानात्मक परिवर्तन के अनुदैर्ध्य में आयु और क्षमता के प्रभाव में वृद्धि की गयी है।

ई. इसहाक, जे. ओट्स और आईएलएसआई 2008, पोषण और अनुभूति: बच्चों और युवाओं में संज्ञानात्मक क्षमताओं का आकलन का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में 400 बच्चों को लिया गया है। जिसमें माध्य मान, मानक विचलन और टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणाम के रूप में बच्चों में संज्ञानात्मक कार्य पर आहार के प्रभावों का अधिक प्रभाव पडता है।

मैनोएक्स सिंह अर्चना, 2005 सामाजिक आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य के बीच संबंध की व्याख्या करने में संज्ञानात्मक क्षमता का अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में 4,158 पुरूष और 1,680 महिलाओं का प्रयोग किया। जिसमें मानक विचलन और सहसंबंध विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणाम के रूप में संज्ञानात्मक क्षमता स्वास्थ्य से संबंधित है, यह स्वास्थ्य में सामाजिक असमानताओं की व्याख्या नहीं करती है।

जेबी कैरोल, 2005 संज्ञानात्मक क्षमताओं का तीन स्तर सिंद्धान्त, लेखक तीन स्तर के सिंद्धांत के अपने विकास को सारांशित करता है और संज्ञानात्मक क्षमताओं की संरचना पर कारक-विश्लेषणात्मक अनुसंधान की अपनी समीक्षा का वर्णन करता है। जिसमें लगभग 6 दशकों की अवधि में एकत्र किए गए कारक-विश्लेषणात्मक अध्ययन शामिल है।

ई फेरर, एमिलियो साल्थहाउस, टिमाथी ए, मैकआर्डल, जॉन जे, स्टीवर्ट, वाल्टर एफ 2005 संज्ञानात्मक क्षमताओं के अनुदैर्ध्य अध्ययन में आयु और पुनः परीक्षण की बहुभिन्नरूपी मॉडलिंग। डेटा के रूप में एन-1200 को लिया गया। विभिन्न आयु और अवसर मिश्रित मॉडल वयस्क व्यक्तियों के 2 अनुदैर्ध्य डेटा सेट किये।

परिणामों ने संकेत दिया कि मॉडल में रीटेस्ट प्रभाव शामिल किए जाने पर स्मृति और प्रसंस्करण गति की आयु ढलानों के बीच संबंध कम हो गया। सुझाव दिया कि अनुदैर्ध्य डेटा का विश्लेषण करते समय आयु और पुनः परीक्षण दोनों को एक साथ मॉडल किया जाना चाहिए क्योंकि विभिन्न अवसरों में परिवर्तन का हिस्सा अभ्यास या प्रतिक्रियाशील प्रभावों के कारण हो सकता है।

वर्तमान समय में मानसिक प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए संज्ञानात्मक क्षमता क्रियाओं का निर्वाह शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। जिससे बच्चे में ज्ञान के प्रति रूचि जागृत होती है तथा बौद्धिक क्षमताओं का विकास होता है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा का चरम लक्ष्य है जो किसी विशेष विषय के विषयों में कौशल विकसित करता है। छात्र विषयों को सीखने में अपने कौशल को बढ़ाते हैं और शैक्षिक अंक हासिल करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। यह छात्राओं और शिक्षकों का एक अल्पकालिक लक्ष्य है। यह लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए छात्र को क्षमता और आत्मविश्वास प्रदान करता है। शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए कोई मानकीकृत उपकरण नहीं है। इसे केवल संस्थागत परीक्षाओं और निरंतर मूल्यांकन द्वारा ही मापा जा सकता है, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, शैक्षणिक उपलब्धि, कौशल विकास और ज्ञान प्रतिधारणा के लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं है क्योंकि छात्र रटकर सीखने पर ध्यान केंद्रित करते है। वे आमतौर पर अपनी परीक्षाओं के बाद सीखे गए विषय को भूल जाते हैं, क्योंकि वे उन्हें रटने की स्मृति का उपयोग करके सीखते हैं।

अर्चना कुमारी एवं डॉ0 कुमारी स्वर्ण रेखा (2022) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव। इन्होंने अपने शोध कार्य को 200 छात्रों पर सर्वेक्षण विधि के द्वारा पूर्ण किया। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से पाया कि शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अंकिता चौरसिया (2021), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में योगाभ्यास का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को लिया गया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय के रूप में मध्यमान, मानक विचलन और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के योगाभ्यास एवं आत्मविश्वास में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सुमन कुमारी (2021) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन। जिसमें इन्होंने 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के में चयनित किया है। इस शोध अध्ययन को सर्वेक्षण विधि से किया गया। ऑकड़ों का विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक आधार वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

डॉ0 कुलदीप (2020) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थियों को चयनित किया गया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। सांख्यिकीय प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया है कि ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्ररेणा स्तर शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा कम प्रभावी वह संतोषजनक पाई गई है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई है तथा विज्ञान व कला वर्ग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सामान्य अंतर पाया गया है।

सेलह, लुस्वेती; जैकिंटा, क्वेना और हेलेन, मोंडोह (2018) प्रिडिक्टिव पावर ऑफ कॉग्नेटिव स्टाइल ऑन एकेडमिक परफॉरमेन्स ऑफ स्टूडेंट्स इन सलेक्टिड नेशनल सेकेण्डारी स्कूल इन केन्या। न्यादर्श के रूप में 293 छात्रों 6 शिक्षकों और 6 परास्नातक शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन से पता चला कि तीन स्कूलों में

छात्र- शिक्षक संज्ञानात्मक शैलियों का एक उच्च स्तर था तथा संज्ञानात्मक शैलियों के चार आयामों में से केवल एक आयाम अनुक्रमिक-वैश्विक आयाम रसायन विज्ञान के प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता था।

जोसेफ, रवांडेमा (2017) ने किगाली शहर रवांडा में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा अध्ययन आदतों और सीखने की शैलियों के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि का एक अध्ययन किया, जिसमें पता चला कि बड़ी संख्या में छात्र औसत से नीचे हो रहे हैं। शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर का वितरण विषम है।

राजकुमार (2016), तकनीकी शिक्षा संस्थान में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, शहरी व ग्रामीण आई टी आई विद्यार्थियों का स्वतन्त्रता स्तर 298 के लिए टी का मान 5.19 प्राप्त हुआ हैं जो कि सार्थकता स्तर 0.01 के मान से अधिक हैं। अतः शहरी व ग्रामीण आई टी आई के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर है।

डॉ मनोज झाझडिया (2015), ''कक्षा 9 स्तर पर जीव विज्ञान की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिक्रमित अनुदेशन तथा अन्य कारकों के प्रभाव का अध्ययन'' विद्यालयों की माध्यमिक स्तर की कक्षा-9 में पढ़ने वाले 100 विद्यार्थियों का चयन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिक्रमित अनुदेशन में सार्थक अन्तर नहीं है।

राजगोपाल,एस. (2015), ''संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजन संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन'' शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 150 छात्रों का चयन किया गया है। शोध से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता पर धनात्मक प्रभाव पाया गया है।

अंशु भाटिया, बइन्दिरा चौधरी (2013), उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के माध्यमिक स्तर कक्षा 10 के 320 विद्यार्थियों को लिया गया है। प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर किया गया। जिसमें मध्यमान, मानक विचलन व टी

परीक्षण का प्रयोग किया। निष्कर्ष हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है।

बसंती ठाकुर (2012), ‘‘किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता पर उनके समाजार्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन‘‘ विद्यालय में जाने वाले बच्चे के लिए समाज की स्वीकृति अत्यंत महत्व रखती है जो बच्चा समाज द्वारा स्वीकृत कर लिया जाता है, वह विद्यालय में आसानी से समायोजित हो जाता है। जिन्हें न्यादर्श के रूप में 200 छात्रों का चयन किया। जिसे परिणाम प्राप्त करने के लिए माध्य, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया। साधारणतया वे विद्यार्थी जिनका सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, वे विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के बीच आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। दूसरी ओर निम्न सामाजिक स्तर के विद्यार्थी विद्यालय में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते। सामाजिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी सीधा प्रभाव डालता है। यह विद्यार्थियों में पृथकता एवं असमानता की भावना उत्पन्न करता है। प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार निम्न सामाजिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन क्षमता उच्च सामाजिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा कम पाई गयी।

रेड्डी प्रताप एम, (2011) ने आत्म प्रभावकारिता भावनात्मक बुद्धिमत्ता उपलब्धि प्रेरणा और अन्य चर के संबंध में डी। ईडी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का एक अध्ययन किया, जिसमें पता चला कि अध्ययन के सभी चर छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाते हैं।

सेरीन, ओगज (2011), ने द इफेक्ट्स ऑफ द कम्प्यूटर वेस्ट इन्स्ट्रशन ऑन अचीवमेंट एण्ड प्रोब्लम सोलविंग रिक्ल्स ऑफ द साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी स्टूडेट्स का अध्ययन किया। शोध के परिणामों से ज्ञात हुआ कि जिन छात्रों को कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन से पढ़ाया गया या उनकी शैक्षिक उपलब्धि व समस्या समाधान क्षमता सामान्य छात्रों से अधिक थी। इस प्रकार कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन का शैक्षिक उपलब्धि व समस्या समाधान कौशल पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

मेश्राम, अरूण कुमार (2010-11): "हाईस्कूल स्तर पर पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके पाल्यों की उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" माता-पिता का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण आरंभ से ही बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। जिसमें न्यादर्श 100 बालकों को लिया गया। जिसे मध्यमान एवं अनोवा का प्रयोग किया गया। शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं जिसका प्रभाव उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। दूसरी ओर अशिक्षित माता-पिता भी बदलते परिवेश में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। साथ ही शिक्षित व अशिक्षित माता-पिता अपनी बच्चियों को भी शिक्षित कर रहे हैं, ताकि वे अपना भविष्य संवार सकें।

सिंह, अमित एवं कुमार दिनेश (2010), ने इमोशनल इण्टेलीजेंन्स एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंटस पर अध्ययन किया। परिणाम से प्राप्त हुआ कि कॉलेज के छात्र व छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर लगभग समान या विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया।

शिक्षक वर्तमान सदी के कौशल का उपयोग करके शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ा सकते है। सीखने का यह नया तरीका शिल्प आधारित अधिगम है। जो क्रियाओं को गतिविधियों के रूप में पूरा करते है। इसका उपयोग पूरी दुनिया के विद्यालय अपने छात्रों की सीखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए कर रहे हैं।

रूचि

रूचि एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण है जो किसी व्यक्ति को एक निश्चित कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह आनंद और संतुष्टि प्रदान करता है। इसके परिणामस्वरूप रूचि की वस्तु के प्रति जिज्ञासा, वस्तु के प्रति उत्साह, किसी के हित के कार्य में लगे रहने के दौरान कठिनाइयों का सामना करने की इच्छा शक्ति, ध्यान और एकाग्रता की विशेषता वाली वस्तु की उपस्थिति से व्यवहार में निश्चित परिवर्तन होता है। उसे रूचि कहते हैं।

पी. के सिंह, 2020 उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षकों के शिक्षण कौशल व विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरूचि तथा शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। न्यादर्श को 200 छात्रों को शामिल किया गया। जो सर्वेक्षण विधि के माध्यम से पूर्ण किया गया। सांख्यिकीय प्रविधियों के

रूप में मध्यमान, मानक विचलन और काई स्क्वायर, टी- परीक्षण को लिया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक तकनीकी के उपयोग के फलस्वरूप शिक्षण कौशल व विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरूचि तथा शिक्षण अधिगम पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

रजनी रानी (2019), माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का लिंग, क्षेत्र और विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन। प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में करनाल जिले के माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञान एवं कला संकाय के 150 अध्यापकों को लिया गया है। अध्ययन हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' परीक्षण और सह-संबधं को सांख्यिकी विधियों के रूप में प्रयुक्त किया। निष्कर्ष में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

पूनम सिंह, डॉ0 छाया श्रीवास्तव (2018) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन शोध कार्य हेतु भिलाई नगर के विभिन्न विद्यालयों में से 6 विद्यालयों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया। इन विद्यालयों में से 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया, जो सर्वेक्षण विधि के द्वारा पूर्ण किया गया तथा सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन व टी- परीक्षण को लिया गया। यह शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन है जिसका निष्कर्ष यह बताता है कि बालक एवं बालिकाओं की रूचि में अन्तर पाया जाता है।

योगेश प्रसाद शर्मा ने (2017) माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी) आयामें के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इस शोध कार्य को मुरादाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों के 100 छात्रों पर किया गया। सर्वेक्षण विधि के द्वारा पूर्ण किया गया तथा सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन व टी- परीक्षण को लिया गया। इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी) आयामों पर सार्थक प्रभाव पड़ता हैं।

पटेल (2016) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रुचि का कुछ चरों के संबंध में एक अध्ययन" इस अध्ययन के लिए अहमदाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 8, 9 एवं 10 के 960 छात्रों का चयन किया गया। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का इस्तेमाल किया और दत्त विश्लेषण के लिए टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों की विज्ञान में रूचि उच्च है। विद्यार्थियों के कक्षा का उनके विज्ञान रुचि पर प्रभाव नहीं पाया गया। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर लड़कों की तुलना में लड़कियों में उच्च है। आठवीं के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण निम्न जबकि कक्षा दस के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण उच्च पाया गया। औसत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्राप्तांक पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

पैनल जोहान डिएल्सा मारियो कुन्हाब सेलिया मनाया बर्नार्डो सबुगोसा-मेडिराक मार्गरिडा सिल्वा 2011 स्वास्थ्य जोखिमों या आनुवंशिक रूप से संशोधित उत्पादों के पोषण मूल्यांकन अध्ययनों पर शोध परिणामों के लिए वित्तीय या व्यावसायिक हितों के टकराव का संघ। उद्देश्य मानदंडों के माध्यम से चुने गए 94 लेखों को शामिल करने वाले एक अध्ययन में यह पाया गया कि वित्तीय या व्यवसायिक हितों के टकराव का अस्तित्व उन अध्ययन परिणामों से जुड़ा था जो आनुवांशिक रूप से संशोधित उत्पादों को अनुकूल प्रकाश डालते हैं। इन परिणामों की तुलना अन्य क्षेत्रों में हितों के टकराव पर समान अध्ययनों से करते हैं, जैसे कि जैव चिकित्सा विज्ञान और गतिशीलता पर परिकल्पना जो ऐसे कनेक्षनों को समझाने में मद्द कर सकती है।

शार्लेट जे. विलियम्स, जॉन एल. शस्टर, ओलिवियो जे. क्ले, और कैथरीन एल. बर्गियो 2006 ने धर्मशाला के मरीजों, की देखभाल करने वालों और चलने वाले वरिष्ठ नागरिकों के बीच अनुसंधान भागीदारी में रूचिः व्यावहारिक बाधाएं या नैतिक बाधाएं? उद्देश्य: इस सर्वेक्षण अध्ययन का उद्देश्य अस्पताल के वरिष्ठ नागरिकों की तुलना में धर्मशाला के रोगियों और देखभाल करने वालों के बीच अनुसंधान भागीदारी में काल्पनिक रूचि का पता लगाना था। डिजाइनः क्रॉस-अनुभागीय सर्वेक्षण। प्रतिभागियों ने सर्वेक्षण/साक्षात्कार और चिकित्सीय अध्ययन में भाग लेने में अपनी रूचि का मूल्यांकन किया। परिणामः अस्पताल रोगियों के 46 प्रतिशत और

देखभाल करने वालों के 60 प्रतिशत ने साक्षात्कार या सर्वेक्षण अनुसंधान भागीदारी में रूचि की सूचना दी। क्रमश: 46 और 57 ने चिकित्सीय अनुसंधान में रूचि व्यक्त की।

ली एस, फ्रीडमैन बीए और एलीहू डी, रिक्टर एमडी, एमपीएच 2004 हितों के टकराव और शोध परिणामों के बीच संबंध, शोधकर्ताओं द्वारा निष्कर्षों की प्रस्तुति पर हितों के टकराव के प्रभाव के संबंध में अनुसंधान सीमित हैं। उद्देश्य: प्रकाशित पांडुलिपियों के लिए धन के स्त्रोतों और रिपोर्ट किए गए निष्कर्षों और हितों के टकराव के बीच संबंध का मूल्यांकन करना। डेटा को 398 व्यक्तियों पर रखा गया है। आत्मविश्वास अंतराल के बीच सकारात्मक परिणामों और सीओआई, आईसीएमजेई परिभाषा के बीच एक मजबूत संबंध देखा।

जस्टिन ई. बेकेलमैन 2003, बायोमेडिकल रिसर्च में वित्तीय हितों के टकराव का दायरा और प्रभाव। उद्देश्य: जैव चिकित्सा अनुसंधान में रूचि के वित्तीय संघर्षों की सीमा, प्रभाव और प्रबंधन पर मूल मात्रात्मक अध्ययनों की समीक्षा करना। 1664 उद्धरणों की जांच के लिए रखा है। निष्कर्ष उद्योग, वैज्ञानिक जांचकर्ताओं और शैक्षणिक संस्थानों के बीच वित्तीय संबंध व्यापक हैं।

नॉर्मन जी. लेविस्की, एम.डी 2002 अनुसंधान में रूचि के गैर-वित्तीय संघर्ष लेखकों की सूची। जांचकर्ताओं और उद्योग के बीच संबंधों में नाटकीय वृद्धि ने हितों के वित्तीय संघर्षों के बारे में उचित चिंता जताई है। अनुसंधान विषयों के हितों के साथ जांचकर्ताओं के गैर-वित्तीय हित कैसे हो सकते हैं और हितों के गैर-वित्तीय संघर्षों के बेहतर प्रबंधन के लिए एक दृष्टिकोण की रूपरेखा तैयार करते है।

रूचि वह माध्यम है जो कि व्यक्ति में कार्य के प्रति उत्सुकता को उत्पन्न करता हैं। जिससे कार्य को प्रभावषाली ढ़ग से किया जा सकता है।

सृजनात्मकता

सृजनात्मकता मानवीय क्रियाकलाप की वह प्रक्रिया है जिसमें गुणगत रूप से नूतन भौतिक तथा आत्मिक मूल्यों का निर्माण किया जाता है। प्रकृति प्रदत्त भौतिक सामग्री में से तथा वस्तुगत जगत की नियमसंगतियों के संज्ञान के आधार पर समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले नये यर्थाथ का निर्माण करने की मानव

क्षमता ही सृजनात्मकता है, जिसकी उत्पति श्रम की प्रक्रिया में हुई हो। सृजनात्मकता निर्माणशील क्रियाकलाप के स्वरूप से निर्धारित होते हैं।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के अनुसार सृजन की प्रक्रिया में कल्पना समेत मनुष्य की समस्त आत्मिक शक्तियां और साथ ही वह दक्षता भाग लेती है जो प्रशिक्षण तथा अभ्यास से हासिल होती है तथा सृजनशील चिंतन को मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक होती है। सृजनात्मकता की संभावनाएं सामाजिक संबंधों पर निर्भर करती हैं। साम्यवाद निजी सम्पत्ति पर आधारित समाज के लिए अभिलाक्षणिक श्रम तथा मानव-क्षमताओं के परकीयकरण को दूर करता है। वह सभी किस्मों और प्रत्येक व्यक्ति की सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षाओं का निर्माण करता है।

चाइंग टैंग, सिबों माऊ, स्टेफनी ई. नॉमन जेवी जिंग (2022) इम्प्रूविंग स्टूडेन्ट क्रिएटिविटी थ्रू डिजिटल टेक्नोलॉजी प्रॉडक्ट्ः ए लिटरेचर रिव्यू। सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले डिजिटल प्रोद्योगिकी उत्पादों और छात्रों की रचनात्मकता पर उनके प्रभाव को समझने के लिए, सामाजिक विज्ञान उद्धरण सूचकांक एसएससीआई द्वारा अनुक्रमित 61 लेखों की समीक्षा की गई। छात्रों की सृजनात्मकता को मापने के लिए (सूचना बचत-साझाकरण, डिजिटल गेमिंग, डिजिटल डिजाइन, डिजिटल लेखन, रोबोटिक्स और आभासी सीखने के माहौल)की छः श्रेणियों की जांच की गयी। छात्रों की सृजनात्मकता मापने के लिए चार तरीकों का इस्तेमाल किया। आउटपुट, प्रक्रिया और सीखने के माहौल। और पांच तरीको का विश्लेषण (बढ़ती प्रेरणा, गतिविधियां, उच्च सोच, रचनात्मक सहयोग और संज्ञानात्मक भार) करता है। विश्लेषण इंगित करता है कि छात्रों की सृजनात्मकता पर डिजिटल प्रौद्योगिकी उत्पादों का प्रभाव मिश्रित है और यह शिक्षण रणनीतियों और सीखने के व्यवहार पर निर्भर करता है।

म्रेको गिनकोला, मैसीमेलिनो पलमैक्रो एण्ड सिनोनिता डी. अमीको (2022) डाइवर्जेंट वट नॉट कन्वर्जेंट थिंकिंग मेडिएटेस द् ट्रेट इमोशनल इंटेलिर्जेस-रियल-वर्ल्ड क्रिएटिविटी लिंकः एन एमपेरिकल स्टडी। जिसमें 63 युवा वयस्कों को एक नमूने में जांच के लिए सम्मिलित किया गया। जिसमें डाइवर्जेंट थिंकिंग और कन्वर्जेंट थिंकिंग

दोनों शामिल हैं। जिसमें स्वतंत्र चर के रूप में विशेषता ईआई, मध्यस्थ के रूप में डीटी और सीटी और आश्रित चर के रूप में सृजनात्मकता है। ट्रेट इमोशनल इंटेलिजेंस प्रश्नावली-लघु संस्करण का उपयोग करके लक्षण ईआई का मूल्यांकन किया जाता है। परिणाम बताते हैं कि डीटी ने विशेषता ईआई और वास्तविक दुनिया की सृजनात्मकता के बीच संबंधों की पूरी तरह से मध्यस्थता की। निष्कर्षों से पता चलता है कि विशेषता ईआई, जिसमें भलाई, आत्म-नियंत्रण, भावुकता और सामाजिकता शामिल हैं। जो बदले में एक सृजनात्मकता आविष्कार के उत्पादन की संभावना को बढ़ाती है।

दिलीप कुमार झा (2019) परम्परागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन। न्यादर्श के रूप में 500 विद्यार्थियों को शामिल किया। उन्होंने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया तथा सांख्यिकीय विधि में माध्य, मानक विचलन, को लिया गया। निष्कर्ष से यह पाया गया कि परम्परागत तथा आधुनिक छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है।

डॉ0 अर्चना सिंह (2019) अनुसूचित जाति एवं सामान्य कोटी के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन। न्यादर्श में उन्होंने 120 विद्यार्थियों का चयन किया तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि अनुसूचित जाति एवं सामान्य कोटी के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता में काफी अंतर पाया एवं ग्ारमीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति श्रेणी के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में कमी पायी गयी।

मणिमाला (2018) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियो की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया। आँकडों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी -अनुपात का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता में अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों में प्रवाहशीलता,

मौलिकता एवं सृजनात्मकता दिव्यांग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा विविधता एक-दूसरे के समान है।

नीरा पाण्डेय (2018), उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन। शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले से उच्चतर माध्यमिक शाला के कुल 251 शिक्षकों का चयन किया गया, जिसके परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों दोनों ही समूहं में सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध है।

सुरेन्द्र कुमार (2018), माध्यमिक विद्यालय स्तर पर दिव्यांग बालकों की अध्ययन आदतों सृजनात्मकता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। जिसमें 400 विद्यार्थियों का चयन किया। शोधार्थी को यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर है इसके लिए विद्यालय पर्यावरण, शिक्षक तथा विद्यालय के प्रकार स्वंय जिम्मेदार है।

काटोच (2017), द्वारा सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एटिट्यूड टुवर्ड्स क्रियेटिव टीचिंग, विषय पर अध्ययन किया गया। वर्तमान शोध के लिए 94 स्कूल शिक्षकों का एक नमूना यादृच्छिक रूप से चुना गया था। विभिन्न समूहों के परीक्षण के बीच अंतर का महत्व जानने के लिए परीक्षण किया गया था। परिणाम संकेत दिया कि विद्यालय लिंग-वार और स्कूल के प्रबंधन के प्रकार, सभी स्कूल के शिक्षकों की रचनात्मक शिक्षण की दिशा में दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है।

कौर, हरविंदर (2016), ने गणित में हाई स्कूल के छात्रों की सृजनात्मकता सीखने की शैलियों और गणितीय योग्यता के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया, जिससे पता चला कि इसका छात्रों की सृजनात्मकता सीखने की शैली और गणितीय योग्यता से सकारात्मक संबंध है।

कुमार, नवीन (2016) ने अपनी रचनात्मकता और सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध में किशोर छात्रों के कक्षा मनोबल और शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया, जिससे पता चला कि कक्षा मनोबल और शैक्षणिक

उपलब्धि नकारात्मक रूप से सहसंबंध है लेकिन रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि सकारात्मक रूप से सहसंबंध है।

हंसराज (2010), उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव। न्यादर्श के रूप में सरकारी व निजी विद्यालयों के 100 छात्रों को यादृच्छिक विधि से चुना गया। परिणाम से पाया गया कि सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता में अन्तर पाया गया।

लता कमल (2010) "हिन्दी विषय शिक्षण द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन"। न्यादर्श 160 छात्र-छात्राओं को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया। निष्कर्ष हेतु हिन्दी विषय के शिक्षण का सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है।

शर्मा रेणुका (2009), ने विद्यालयी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप 300 छात्राओं का चयन किया। परिणाम के आधार पर सृजनात्मकता के विभिन्न आयामों का वितरण सामान्य प्रायिकता वक्र के अनुरूप है और निजी विद्यालयों के छात्रों की प्रवाहिता, लोचकता एवं मौलिकत सरकारी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अधिक पाई गयी।

चैरिटॉन क्रिस्टाइन (2008), अभियांत्रिकी एवं संगीत के विद्यार्थियों के मध्य सृजनात्मकता (वैज्ञानिक, कलात्मक व सामान्य) और आपत्ति सहनशीलता पर अध्ययन किया। न्यादर्श में 100 संगीत व 105 अभियांत्रिकी के विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया। परिणाम में पाया गया कि संगीतज्ञों ने सामान्य एवं कलात्मक सृजनात्मकता में अधिक अंक प्राप्त किये गये जबकि संगीतज्ञ एवं अभियंताओं के लिए वैज्ञानिक सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। छात्र -छात्राओं में सामान्य, वैज्ञानिक या कलात्मक सृजनात्मकता के आधार पर कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया।

द मॉडर्न ट्रेंड, जो एसटीईएम शिक्षा के साथ एआरटी विषयों के एकीकरण के साथ शिक्षित करने में मदद करता है। यह शिक्षण और सीखने के अभ्यास की नई तकनीक देता है जब सभी विषयों को उद्देश्यपूर्ण रूप से

एकीकृत किया जाता है। इस प्रवृत्ति में एक क्षेत्र को आधार क्षेत्र के रूप में और दूसरे विषय को आधारित क्षेत्र के अपने हिस्से के रूप में उपयोग करें। (सैंडर्स मार्क 2009)

एनसीईआरटी, (2019) ने जोर दिया कि ''प्राथमिक स्तर पर, कला को सभी विषयों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए और विभिन्न अवधारणाओं के शिक्षण और सीखने के लिए उपयोग और दृष्टिकोण किया जाना चाहिए।'' छात्रों में जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और आश्चर्य की भावना को बढ़ाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

वर्तमान में शिल्प आधारित शिक्षा जिसमें कक्षागत शिल्प क्रियाओं का आयोजन करते हुए शिक्षक अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर एवं मनोरंजक बना सकते है। शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण से बोझीला एवं नीरसता पूर्ण व्याकरण के सूत्रों को सरल एवं सुगम बनाया जा सकता है। इन क्रियाओं को अध्यापक के निर्देशन में करते हुए छात्राएं व्यक्तिगत एवं सामूहिक शक्तियो के विकास के साथ-साथ शैक्षिक उपलब्धि, संज्ञानात्मक क्षमताएं, रूचि एवं सृजनात्मकता की क्षमताओं को बढ़ा सकती है।

समस्या का प्रार्दुभाव

विद्यार्थी कक्षा में अपनी योग्यताओं व क्षमताओं के अनुरूप सीखते हैं। परम्परागत शिक्षण में व्यक्तिगत विभिन्नताओं को अधिगम में कोई स्थान नहीं दिया जाता है। हिन्दी व्याकरण के इतने व्यापक प्रचार-प्रसार होने पर भी सामान्यतः यह देखा जा रहा है कि विद्यार्थी हिन्दी व्याकरण में गुणात्मक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि बच्चे हिन्दी व्याकरण के विषय में कुछ आने वाली समस्याओं का सामना करते हैं। जैसे- भाषा को सुनना और ठीक से समझना सीखना, नई ध्वनियों और शब्दों का उच्चारण करना सीखना, व्याकरण और शब्दावली में उच्च परिणाम हासिल करना, पढ़ना और लिखना सीखना, संस्कृति और कठबोली से परिचित होना और नए भाषण के स्वर और ताल पर ध्यान देना आदि। लेकिन ये सभी एक नई भाषा सीखने के महत्वपूर्ण घटक हैं। जिनको दृष्टिगत रखते हुए हिन्दी व्याकरण की समस्याओं पर अनेक शोध कार्यों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

1. सरजना पेंडिडिकन, 2018, स्वतंत्र पाठ्यक्रमों के माध्यम से व्याकरण सीखने में ईएफएल छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियॉ का अध्ययन किया।
2. पेंग, 2017, ने कहा, किसी भाषा के व्याकरण को सीखे बिना, व्याकरणिक रूप से स्वीकार्य उच्चारण बनाने की क्षमता हासिल करना कठिन और असंभव नहीं है।
3. आजाद 2013 के एक सर्वेक्षण ने शिक्षकों से पूछा कि क्या उनके छात्र स्पष्ट व्याकरण निर्देश की अपेक्षा करते हैं। आधे से अधिक शिक्षक 60 प्रतिशत सहमत थे, और 16.67 प्रतिशत दृढ़ता से सहमत थे कि उनके छात्र स्पष्ट व्याकरण निर्देश चाहते हैं।
4. स्मिथा, जे.एम. 2010 ने अपने अध्ययन इफैक्टिव नैस ऑफ लैडर गेम्स फॉर लर्निग हिन्दी ग्रामर इन स्टैण्डर्ड 8 हेतु प्रयोगात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसके लिये प्री-टैस्ट, पोस्ट-टैस्ट अभिकल्प चुना गया। उपकरण के रूप में लैडर गेम, उपलब्धि परीक्षण व सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया तथा पाया गया कि लैडर गेम ग्रुप (एलजीजी) कन्वैशनल मैथड ग्रुप (सीएमजी) के बजाय ज्यादा प्रभावी रहा।
5. वर्मा, मीनू 2008-2009 ने अपने अध्ययन में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के हिन्दी व्याकरणगत् अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया।
6. अग्निहोत्री कुसुम, (2009) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषा शिक्षण के विकास में शिल्प आधारित कला के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन करना। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोध जनसंख्या में से 200 छात्रों को यादृच्छिक विधि के द्वारा चयनित किया गया। सांख्यिकी विधियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि भाषा शिक्षण में शिल्प आधारित कला का सार्थक प्रभाव पाया गया।
7. रॉबिन रोनेय, (2004) ने आर्ट बेसड टीचिंग एण्ड लर्निग कला आधारित शिक्षण और सीखने के मॉडल छात्रों की अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन किया। इसमें न्यादर्श 300 का चयनित किया गया। उपकल्पनाओं

के परिणाम के लिए मध्यमान, मानक विचलन और टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। कला आधारित शिक्षण और सीखने के बारे में बताया है। आर्टक्सेन टीचिगं एण्ड लर्निग कला आधारित शिक्षण के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

8. मॉरेम लेबिल और तीर्थेकर राय (2003) ने लेख ''हैंडमडे इन इंडिया'' पर अध्ययन किया। अध्ययन को प्रायोगिक विधि के द्वारा पूर्ण किया। अध्ययन के लिए उन्होंने 100 छात्रों को यादृच्छिक रूप से चयनित किया। सांख्यिकी विधियों के रूप में मध्यमान एवं प्रतिशत का प्रयोग किया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि हस्तशिल्प के माध्यम से छात्रों की कार्यक्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
9. म्यर्दल के. (2000) ने कॉटेज एडं हैंडीक्राफ्ट इंडस्ट्रीज फॉर प्रोब्लम एण्ड और संभावनाएं पर अध्ययन किया गया। हस्तशिल्प पर आधुनिक यंत्रीकृत उद्योगों के प्रतिकूल प्रभाव को कवर करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया और जिसके लिए उन्होने 100 छात्रों का यादृच्छिक से चयन किया। मध्यमान, मानक विचलन और टी परीक्षण का प्रयोग सांख्यिकी रूप में किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि कॉटेज एडं हैंडीक्राफ्ट इंडस्ट्रीज फारॅ प्रोब्लम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

हिन्दी व्याकरण अपने आप में बहुत कठिन और परिश्रम पूर्ण कार्य है। लेकिन अध्यापक बच्चों के हितों के लिए अधिक प्रयास करके व्याकरण शिक्षण में रोचकता लाने का प्रयास करते है। जिसमें अध्यापक विभिन्न प्रकार की शिल्प कलाओं का प्रयोग करके छात्राओं के संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता को बढ़ाने का प्रयास करता है। इसलिए अध्यापक विभिन्न प्रकार के कौशलों का प्रयोग करके छात्राओं की दैनिक क्रियाकलापों के साथ जोड़कर सिखाने का प्रयास करता है। इस प्रकार छात्राओं के ज्ञान और अबवोध क्षमताओं का निरन्तर विकास होता है। परन्तु आज कल शैक्षिक क्रियाकलापों की जटिलता को देखकर छात्राओं का हिन्दी व्याकरण के प्रति रूझान कम प्रतीत होता दिख रहा है। विभिन्न प्रकार की तकनीक होने के बावजूद भी छात्राओं का परस्पर अंतक्रिया न होने की वजह से शिक्षा की कडी कमजोर नजर आ रही है। इसलिए हिन्दी व्याकरण से

सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की समस्यायें नजर आ रही है। इन समस्याओं को केन्द्र बिन्दु बनाकर प्रस्तुत शोध शीर्षक सामने रखने का प्रयास किया गया है।

समस्या का औचित्य

हिन्दी व्याकरण में विभिन्न सूत्रों को पढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियों के द्वारा शिल्प कला के ज्ञान का उपयोग करके छात्राओं की संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि और सृजनात्मकता पर शिल्प आधारित शिक्षण के प्रयोग से छात्राओं में आत्मरूचि को जागृत करना। जिससे वह हिन्दी व्याकरण के कार्य को पूर्ण निष्ठा के साथ करने में सक्षम हो सकेंगी। हिन्दी व्याकरण अधिगम को स्थानान्तरित करने के लिए छात्राओं में शिल्प कलाओं के माध्यम से उनकी अभिवृत्तियों को बदला जा सकता है। शिल्प आधारित शिक्षण के द्वारा छात्राएं स्वअभिप्रेरित होकर हिन्दी व्याकरण शिक्षण को सीखने में रूचि लेगीं। जिससे छात्राओं में संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता बढ़ाने में मद्द मिल सकती है। कक्षा शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के शिल्प आधारित गतिविधियों का प्रयोग करके छात्राओं को हिन्दी व्याकरण शिक्षण को आसान तरीके से सिखाने का प्रयास किया जा सकता है। जिसके फलस्वरूप छात्राएं अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओं का प्रयोग करके पाठ्यक्रम को सरल एवं सहज तरीके से सीख सकती है। इस प्रकार हिन्दी व्याकरण को शिल्प आधारित शिक्षण के माध्यम से शिक्षण प्रदान किया जाये तो उससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिल्प आधारित शिक्षण के द्वारा व्याकरण शिक्षण से छात्राएं अपनी दिनचर्या का अधिकांश समय रूचि व सृजनात्मक क्रियाओं में व्यतीत करती है जिससे वह किसी भी कार्य को अपनी संज्ञानात्मक क्रियाओं के माध्यम से एक नया रूप प्रदान करती हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता का स्तर अधिक से अधिक विकसित हो सकता है।

1. क्या हिन्दी व्याकरण हेतु शिल्प आधारित शिक्षण कक्षागत शिक्षण में प्रभावी रहेगा?
2. संज्ञानात्मक क्षमता के विकास हेतु किस प्रकार का शिक्षण उपयुक्त हैं?
3. क्या शिल्प आधारित व्याकरण शिक्षण से छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है?

4. क्या शिल्प आधारित शिक्षण के प्रयोग से हिन्दी व्याकरण रूचि पूर्ण हो सकता हैं?

5. क्या शिल्प आधारित व्याकरण शिक्षण प्रक्रियाओं से कक्षागत शिक्षण रूचिपूर्ण हो सकता हैं?

6. व्याकरण शिक्षण में नीरसता समाप्त करके सृजनात्मक बनाने का क्या-क्या उपाय हैं?

7. क्या शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण छात्राओं की रूचि एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव डाल सकता है?

शोधार्थिनी के मस्तिष्क में उत्पन्न उपरोक्त प्रश्नों का समाधान करने हेतु शोधार्थिनी ने प्रस्तुत अध्ययन में शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का निर्माण करके उसका प्रभाव संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता पर देखने के लिए अर्द्ध प्रायोगिक अनुसंधान विधि द्वारा अध्ययन करने के लिए शीर्षक का चयन किया है।

समस्या कथन

"शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता पर प्रभाव।"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

शिल्प आधारित शिक्षा

सैद्धान्तिक परिभाषायें

"शिल्प कला एक ऐसी प्रक्रिया है जो कल्पना व कौशल से बनी होती हैं, जैसे-पेंटिंग, मूर्तियां आदि, जो सुंदर, महत्वपूर्ण विचारों या भावनाओं को व्यक्त करने के लिए बनाई जाती है।" **- आर. सुमनेर, 1968**

"शिल्प आधारित शिक्षा व्यक्तियों में कौशल विकसित करने और अंतः विषयों के तरीकों से, विषयों को सीखने का एक आसान तरीका है।" **- विलियम मोरिस 1970**

कार्यात्मक परिभाषा

"शिल्प आधारित शिक्षा से तात्पर्य छात्राओं को विभिन्न शिल्प आधारित गतिविधियाँ जैसे- पेपर क्राफ्ट, क्ले, ओरिगामी, क्विल्लिंग, स्क्रेपबुक, वीविंग, एम्ब्रॉइडरी, केलिग्राफी, कठपुतली, हेण्डीक्राफ्ट और पेपर मेशी आदि का प्रयोग करते हुए व्याकरण शिक्षण प्रदान करने की प्रक्रिया से है।"

हिन्दी व्याकरण

सैद्धान्तिक परिभाषायें

"व्याकरण वह विद्या है जिसके द्वारा किसी भाषा का शुद्ध बोलना, लिखना एवं समझना आता है। भाषा की संरचना के कुछ नियम होते हैं और भाषा की अभिव्यक्तियॉ असीमित होती हैं। भाषा के इन नियमों को एक साथ जिस शास्त्र के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है उस शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।"

- राबर्ट जे. मेयर्स, 1968

"हिन्दी भाषा को प्रभावी ढ़ग से संवाद करने के लिए व्याकरण की आवश्यकता होती है।"

- रिचर्ड नॉर्डक्विस्ट 2020

कार्यात्मक परिभाषा

"हिन्दी व्याकरण से तात्पर्य कक्षा- 8 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम में समावेशित व्याकरण सम्बन्धी उन अध्यायों से है, जिन्हें शिल्प आधारित क्रियाओं के माध्यम से समझाया एवं व्याकरणिक नियमों का ज्ञान कराया जाएगा।"

संज्ञानात्मक क्षमता

सैद्धान्तिक परिभाषायें

"संज्ञानात्मक क्षमता वह प्रक्रिया है जिसमें तर्क करने, योजना बनाने, समस्याओं को हल करने, अमूर्त रूप से सोचने, जटिल विचारों को समझने, जल्दी से सीखने और अनुभव से सीखने की क्षमता शामिल होती है।"

- गॉटफ्रेडसन, 1997

"संज्ञानात्मक क्षमता से तात्पर्य ऐसी मानसिक क्रियाओं से है जो व्यक्ति के अधिगम में होनी चाहिए। तर्क करने, धारण करने, सीखने, सोचने, समझने, अनुभव करने एवं योजना बनाने की क्षमताओं का निर्माण करने से है।" **- कैरोल, 1993**

कार्यात्मक परिभाषा

"संज्ञानात्मक क्षमता से अभिप्राय शिल्प आधारित शिक्षण क्रियाओं से प्राप्त अनुदेशनों का प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण के नियमों एवं उनके उदाहरणों को सीखने की क्षमता से है ।"

शैक्षिक उपलब्धि

सैद्धान्तिक परिभाषायें

" शैक्षिक उपलब्धि वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।" **- मिट्जेल एच.ई., 1984**

" शैक्षिक उपलब्धि वह प्रक्रिया है जिसमें छात्र द्वारा ग्रहण किए हुए ज्ञान का अथवा किसी कौशल में निपुणता का मापन करता है।" **- इबेल, 1965**

"शैक्षिक उपलब्धि वे हैं जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।" **-फ्रीमैन (2008)**

कार्यात्मक परिभाषा

"प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य कक्षा - 8 के विद्यार्थियों में हिन्दी व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान, समझ एवं कुशलताओं में शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण के प्रयोग से पूर्व एवं प्रयोग के पश्चात् होने वाली वृद्धि से है, जो प्रयोग से पूर्व एवं प्रयोग के पश्चात् स्वयं निर्मित उपलब्धि परीक्षण द्वारा ज्ञात किया जाएगा।"

रूचि

सैद्धान्तिक परिभाषायें

"रूचि किसी अनुभव में संविलीन होने एवं इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है।" **- बिंघन, 1926**

"किसी वस्तु व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करने या उसमें सन्तुष्टि पाने की ओर ध्यान केंद्रित करने वाली प्रवृत्ति को रूचि कहते है।" **- गिल्फोर्ड, 1987**

कार्यात्मक परिभाषा

"रूचि से तात्पर्य शिल्प आधारित शिक्षण क्रियाओं के माध्यम से छात्राओं में हिन्दी व्याकरण के विभिन्न अध्यायों के प्रति रूझान या लगाव उत्पन्न करना, जिससे छात्राओं में उन अध्यायों को सीखने हेतु वास्तविक रूचि उत्पन्न होगी।"

सृजनात्मकता

सैद्धान्तिक परिभाषायें

"जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।" **- बोरेन 1973**

"सृजनात्मकता उन विचारों को उत्पन्न करने की क्षमता है जो भिन्न सोच के माध्यम से नए और उपयोगी दोनों हैं। **- गिलफोर्ड, 1959**

"सृजनात्मकता कुछ नया बनाने या करने की क्षमता है जो दूसरों के लिए उपयागी या मूल्यवान है।

- गार्डनर, 1993

कार्यात्मक परिभाषा

"सृजनात्मकता से तात्पर्य शिल्प आधारित शिक्षण क्रियाओं के माध्यम से छात्राओं में हिन्दी व्याकरण के विभिन्न अध्यायों को नवीनता, मौलिकता एवं प्रवाह के साथ समझ विकसित करने से है, जिसके माध्यम से छात्राएं अन्य नवीन प्रयोग अध्यायों के सम्बन्ध में कर सकेगी।"

अध्ययन के उद्देश्य

1. छात्राओं की शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का संज्ञानात्मक क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राओं की शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. छात्राओं की शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का रूचि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. छात्राओं की शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अध्ययन की परिकल्पनाएं
6. शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का छात्राओं की संज्ञानात्मक क्षमता पर सार्थक अन्तर होगा।
7. शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अन्तर होगा।
8. शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का छात्राओं की रूचि पर सार्थक अन्तर होगा।
9. शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का छात्राओं की सृजनात्मकता पर सार्थक अन्तर होगा।

अध्ययन की परिसीमाएं

वर्तमान अध्ययन को निम्न तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में सीमित किया जाएगा।

1. आगरा शहर के प्रेम विद्यालय गर्ल्स इण्टरमीडिएट कॉलेज को ही सौद्देश्यपूर्ण विधि से ही लिया जाएगा।
2. वर्तमान अध्ययन को आठवीं कक्षा के छात्राओं तक ही सीमित रखा जाएगा।
3. हिन्दी व्याकरण में शिल्प आधारित अनुदेशो से युक्त 30 पाठ योजनाओं का ही निर्माण कक्षा में पढ़ाने हेतु किया जाएगा।
4. अध्ययन को 60 (30 नियंत्रित समूह व 30 प्रायोगिक समूह) छात्राओं तक सीमित कर दिया जाएगा।

अध्ययन के चर

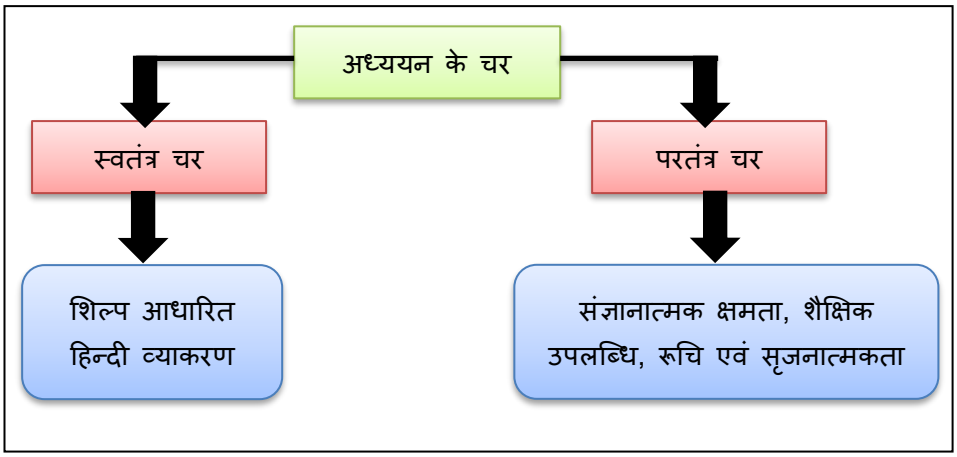

चित्र 1 अध्ययन के चर

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में अर्द्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प के द्वारा किया जाएगा। इस अध्ययन में न्यादर्श को सौद्देश्यपूर्ण एवं यादृच्छिक विधियों से चयनित किया जाएगा।

अध्ययन का न्यादर्श

जनसंख्या

शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। वह सजातीय होते हैं। जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। एक विशिष्ट समूह की समस्त इकाइयों को मिलाकर जनसंख्या कहते हैं। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थिनी द्वारा माध्यमिक स्तर की आठवीं कक्षा में अध्ययनरत छात्राओं को जनसंख्या के रूप में लिया जायेगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य अध्ययन के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु शोधकत्री अर्द्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प का प्रयोग करेंगी, जिसके अन्तर्गत विद्यालय का चयन सौद्देश्यपूर्ण विधि से एवं कक्षा - 8 के वर्गो (section) को यादृच्छिक विधि से चयनित करेंगें। चयनित दो वर्गों में नियंत्रित समूह 30 एवं 30 प्रायोगिक समूह की छात्राओं को इंटैक्ट (Intact) समूह को पढ़ाया जाएगा।

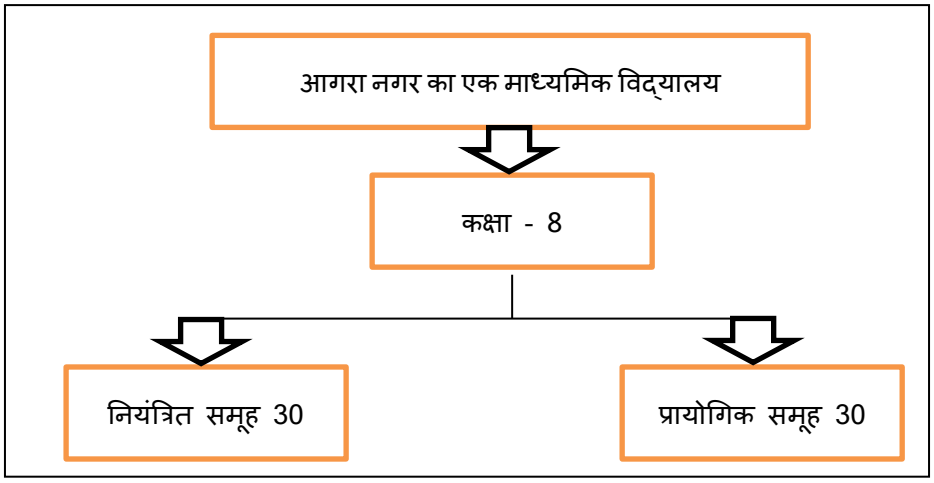

चित्र 2 अध्ययन का न्यादर्श

प्रयोगात्मक विधि की रूपरेखा

प्रस्तुत शोध कार्य अध्ययन के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु शोधकत्री अर्द्ध-प्रयोगात्मक अभिकल्प का प्रयोग करेंगी, जिसके अन्तर्गत विद्यालय का चयन सौद्देश्यपूर्ण विधि से एवं कक्षा - 8 के वर्गो (section) को यादृच्छिक विधि से चयनित करेंगें। चयनित दो वर्गो में नियंत्रित समूह 30 एवं 30 प्रायोगिक समूह की छात्राओं को इंटैक्ट (Intact) समूह को पढ़ाया जाएगा। दोनों समूहों पर संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता का पूर्व एवं पश्च परीक्षण किया जायेगा। प्रयोग की प्रभावशीलता हेतु छात्राओं का बोर्ड, विद्यालय, आयु, एसईएस, लिंग आदि को नियन्त्रित किया जायेगा।

तालिका सं-2 प्रयोगात्मक विधि की रूपरेखा

समूह	पूर्व हस्तक्षेप चरण	हस्तक्षेप चरण	पश्च हस्तक्षेप चरण
प्रयोगात्मक समूह	• संज्ञानात्मक क्षमता सूची • स्वनिर्मित हिन्दी व्याकरण शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण • रूचि मापनी • स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी	माध्यमिक स्तर की 30 छात्राओं को 60 दिनों के लिए 30 शिल्प आधारित व्याकरण पाठ योजनाओं को प्रयोगात्मक ढ़ग से पढ़ाया जाएगा। (प्रति कक्षा 40 मिनट)	• संज्ञानात्मक क्षमता सूची • स्वनिर्मित हिन्दी व्याकरण शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण • रूचि मापनी • स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी
नियंत्रण समूह	• संज्ञानात्मक क्षमता सूची • स्वनिर्मित हिन्दी व्याकरण शैक्षिक	माध्यमिक स्तर की 30 छात्राओं को 60 दिनों के लिए 30 हिन्दी व्याकरण पाठ योजनाओं को परम्परागत शिक्षण से पढ़ाया	• संज्ञानात्मक क्षमता सूची • स्वनिर्मित हिन्दी व्याकरण शैक्षिक

	उपलब्धि परीक्षण • रूचि मापनी • स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी	जाएगा। (प्रति कक्षा 40 मिनट)	उपलब्धि परीक्षण • रूचि मापनी • स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी

अध्ययन की प्रक्रिया

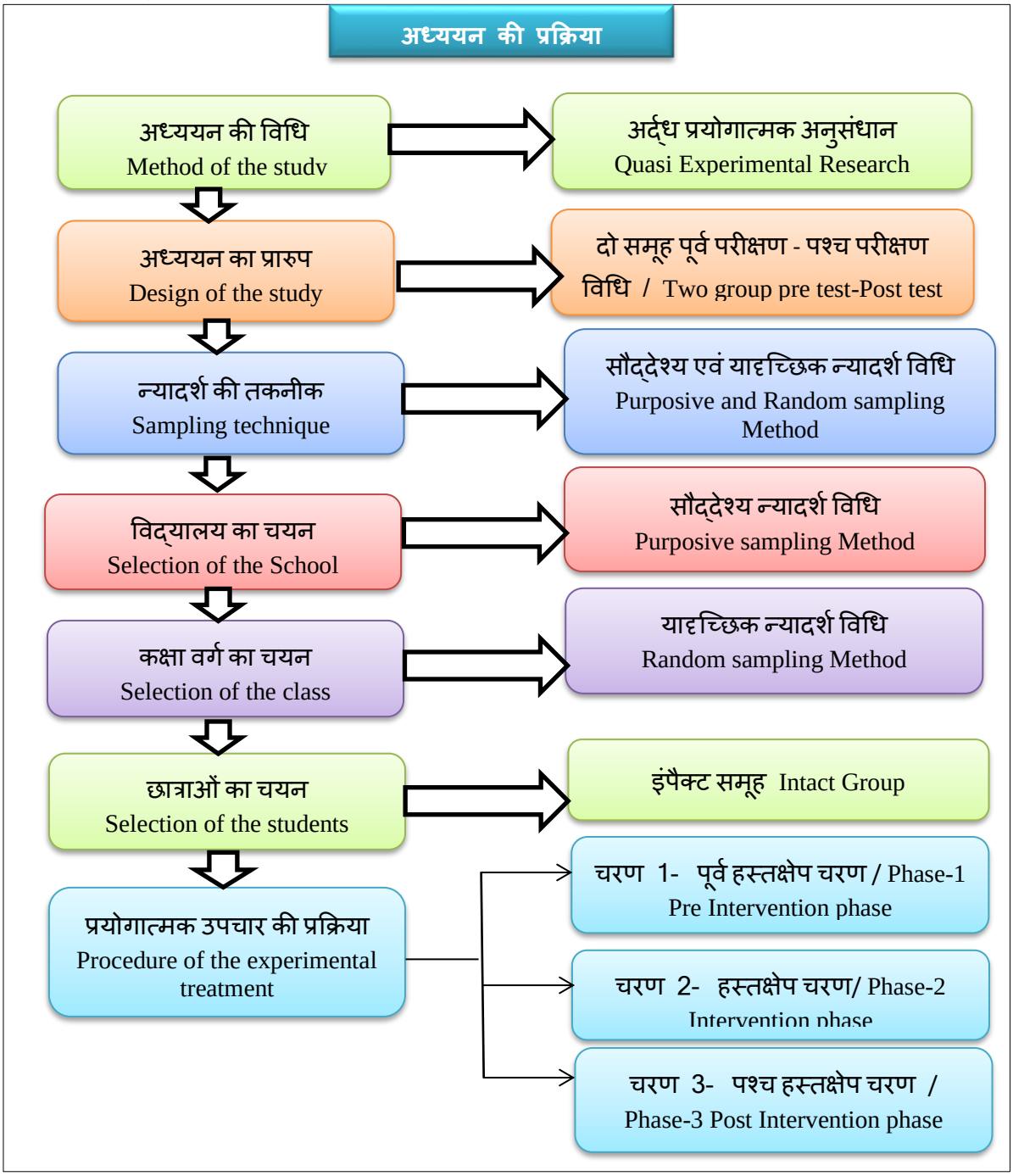

चित्र 3 अध्ययन की प्रक्रिया

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में संज्ञानात्मक क्षमताएं, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मकता मापनियों का प्रयोग किया जायेगा।

1. संज्ञानात्मक क्षमता (Cognitive Ability) के मापन के लिए डॉ. विशाल सूड एवं मिस पूजा शर्मा द्वारा निर्मित (Cognitive Abilities Test, 2018) सी. ए. परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका सं-3 संज्ञानात्मक सम्बन्धी उपकरण

चर का नाम	उपकरण का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन वर्ष	विद्यार्थियों की आयु
संज्ञानात्मक क्षमता	संज्ञानात्मक क्षमता	डॉ. विशाल सूड एवं मिस पूजा शर्मा	2018	12-14
	संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण	मधू गुप्ता और बिन्दीयां लखानी	1987	16-25
	संज्ञानात्मक शैली सूची	प्रवीन कुमार झा	1864	18+
	संक्रमण काल के लिए संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण	वसुन्धरा पदमानभान	1965	10-13
	संज्ञानात्मक विरूपण स्केल	देवेंद सिंह सिशोधिंया एवं धर्मेंद्र शर्मा	1962	सभी आयु के लिए
	मेटा संज्ञानात्मक कौशल स्केल	मधु गुप्ता एण्ड सुमन	1978	18+

उपयुर्क्त तालिका के अध्ययन को स्पष्ट है कि शोधार्थिनी ने संज्ञानात्मक क्षमता से सम्बन्धित 6 परीक्षणों का अध्ययन किया है, जिसमें से डॉ. विशाल सूड एवं मिस पूजा शर्मा द्वारा निर्मित (Cognitive Abilities Test, 2018) सी. ए. परीक्षण का चयन, समय परिस्थिती और उद्देश्यों को ध्यान में रख कर किया गया है। यह परीक्षण शेष 5 उपकरणों की अपेक्षा अधिक नवीन व आयु समूह और शोध उद्देश्यों के अनुकूल है।

2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि हिन्दी व्याकरण मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका सं.-4 शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी उपकरण

चर का नाम	उपकरण का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन वर्ष	विद्यार्थियों की आयु

शैक्षिक उपलब्धि	सेल्फ असेसमेंट टेस्ट	जे.पी. गिलफोर्डस	1951	4+
	अंग्रेजी भाषा शैक्षिक उपलब्धि और मनोवृत्ति समूह डेटा संग्रह उपकरण पर रणनीतियॉ	ए.के. श्री	2002	12-22
	शैक्षिक उपलब्धि और अंग्रेजी आंकलन उपकरण मापन	जे. आर. विले	2006	13-17
	शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण	ज्योति चक्रवती	2011	16-21
	शैक्षणिक प्रदर्शन (विज्ञान) को मापने के लिए उपकरण	क्रिस ताचिबाना	2017	10-18

उपयुक्त तालिका में सृजनात्मक से सम्बधित 5 परीक्षणों का अध्ययन किया हैं । यह सभी उपकरणों आठवीं कक्षा व शोध कार्यों के उद्देश्यों के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए हम स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि हिन्दी व्याकरण मापनी का प्रयोग करेंगें।

3. Interest (रूचि) का अध्ययन करने के लिए डॉ. टी. एस. शोधी एण्ड एच. भट्नागर द्वारा निर्मित्त (Interest Inventory, 2004) आई. परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका सं.-5 रूचि सम्बन्धी उपकरण

चर का नाम	उपकरण का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन का वर्ष	विद्यार्थियों की आयु
रूचि	रूचि परीक्षण	डॉ. टी. एस. शोधी एण्ड एच. भट्नागर	2004	14-21
	गणित रूचि मापनी	यू. टंडन एण्ड अशोक पाल	2012	15-18
	विज्ञान रूचि मापनी	एल. एन. दुबे एवं अर्चना दुबे	2005	13-17
	वैज्ञानिक रूचि परीक्षण	के. एस. मिश्रा	2012	4-7

शोधार्थिनी ने रूचि से सम्बन्धित 4 परीक्षणों का अध्ययन किया हैं जिनमें से डॉ. टी. एस. शोधी एण्ड एच. भट्नागर, 2004 में निर्मित रूचि परीक्षण को चुना गया है, क्योंकि यह सभी उपकरणों में नवीन, आयु समूह व शोध कार्यों के उद्देश्यों के अनुरूप हैं।

1. सृजनात्मता के लिए स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका सं.-6 सृजनात्मकता सम्बन्धी उपकरण

चर का नाम	उपकरण का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन का वर्ष	विद्यार्थियों की आयु
सृजनात्मकता	रचनात्मक सोच का गैर मौखिक परीक्षण	मेंहदी बाकर	1962	6-8
	रचनात्मक सोच के टॉरेंस टेस्ट और रोर्शच इंकब्लॉट टेस्ट	जे.पी. गिलफोर्डस	1975 Revised 1984	10-14
	रचनात्मकता परीक्षण (विज्ञान) का निर्माण और मानकीकरण	बाकर डॉ. अंजली शर्मा एण्ड विजय रानी	2017	11-20

उपयुक्त तालिका में सृजनात्मक से सम्बधित 3 परीक्षणों का अध्ययन किया हैं । यह सभी उपकरणों आठवीं कक्षा व शोध कार्यों के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं हैं। इसलिए हम स्वनिर्मित सृजनात्मकता मापनी का प्रयोग करेंगें।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में शिल्प आधारित शिक्षण का प्रभाव प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के मध्य देखने एवं उन समूह में सार्थक अन्तर का विश्लेषण करने हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

1. वर्णनात्मक सांख्यिकी- मध्यमान, मानक विचलन।

2. निष्कर्षात्मक सांख्यिकी- टी परीक्षण (30 प्रायोगिक समूह एवं 30 नियंत्रित समूह की छात्राओं के प्रभाव का अन्तर प्राप्त करने के लिए)

निष्कर्षः-

वर्तमान परिस्थितियों में छात्र व्यावसायिक चुनाव को प्राथमिकता देते हुए विद्यालयी स्तर पर भाषा अध्ययन को निम्न वरीयता दे रहे है जिससे भाषा कौशलों में गहरी खाई उत्पन्न हो रही है। त्रिभाषा सूत्र लागू करने के बावजूद माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कई वाचन, लेखन, श्रवण एवं सम्प्रेषण कौशलों का अभाव हो रहा है। अन्य विषयों में प्रवीण होने के लिए भी छात्राओं में सम्प्रेषण कौशलों की आवश्यकता है, जो भाषा मुख्यतः व्याकरण शिक्षण से विकसित होती है।

अतः हिन्दी जो भारत की राष्ट्रीय भाषा है, उस हिन्दी व्याकरण शिक्षण को शिल्प आधारित अनुदेशात्मक रणनीतियों से पढ़ाने पर छात्राओं की रचनात्मक, संज्ञानात्मक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं सृजनात्मक कौशलों का विकास करके भाषा शिक्षण में शस्वत स्मृति का विकास करने हेतु शिल्प आधारित हिन्दी व्याकरण शिक्षण का प्रयोग शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

अस्तुति, एन.टी. (2017). पैंगरूह गया बेलजार तेरहदाप पेंगूसान कोसाकाटा बहासा इंग्रिस. दीक्सिस, 9 (03), 336-349.

एएल-मेखलाफी, ए.एम., एण्ड नागारतनाम, आर. पी. (2011). डिफिकल्टिस् इन टीचिंग एण्ड लर्निग ग्रामर इन एन ईएफएल कॉन्टेक्ट. ऑनलाइन सबमिसन, 4(2), 69-92.

एवेल रॉबर्ट एल. (1966). ''मेजरिंग ऐजुकेशनल अचीवमेंट'', प्रेन्टिस हाल ऑफ इडिंयन प्राइवेट. लिमिटेड, नई दिल्ली. 20.

एमसीगी किंमबेरले (2018) डेफिनेसन ऑस प्राइमरी ऐजुकेशन, द् क्लासरूम.कॉम

एनसीईआरटी, (2019). आर्ट एंटीग्रेटेड गाइडलाइन्स.

कोमिनीस ए. जे., (1947). आर. उलीच (एड.), थ्री थाउजेंट ईयर ऑफ एजुकेशनल विजडम; सिलेक्सन्स फिरोम ग्रीट डॉक्यूमेंट्स.

कैरोल जे.बी. (1993). हुमन कॉगनेटिव एविलिटीसः ए सर्वे ऑफ फेक्टर- ऐनालाटिक स्टडीस, न्यू यॉर्क कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

कैरोल, जे. बी. (2005). द् थ्री-स्ट्रेटम थ्योरी ऑफ कॉगनेटिव एविलिटीइस. इन डी. पी. फलेनागन एण्ड पी.एल. हैरिसन (एड्स.), कंटेम्परारी इन्टेलेक्चुअल असिसमेंटः थ्रियोरीस, टेस्ट्स, एण्ड इश्यूज (पे. 69-76). द् गिलफॉर्ड प्रेस.

कुमार, नवीन, (2016). क्लासरूम मॉरेल एण्ड अकादमिक अचीवमेंट ऑफ ऐडलेसन्ट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर क्रेटिविटी एण्ड सॉसियो इकनॉमिक स्टेटस.

कु. झा दिलीप (2019), ''परम्परागत और आधुनिक छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता तथा शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' वॉल्यूम-3 आईएसएसएनएन नम्बर-2394.0344।

कुलदीप डॉ. (2020),''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'' आईजेएआर 2020;5(11):284-287, आईएसएसएन ऑनलाइन 2394-5869, एसेप्ट-24.10.2020

क्रोएसबेर्गेन अन्य, (2020) ''एनरिचिंग मैथमेटिक्स एजुकेशन विद विजुअल आर्ट्सः इफेक्ट्स ऑन एलीमेट्री स्कूल स्टूडेन्ट्स एबिलिटी इन ज्योमेट्री एण्ड विजुअल आट्स'', आईजेएसएमई,18,8,(2020), पीपी. 1613-1634, आईएसएसएन-1571-0068.

कुमारी सुमन (2021) ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक सजगता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन,'' (आईजेआरएसएमएल), आई्एसएसएनः 2321-2853.

कुमारी अर्चना एवं कुमारी डॉ0 स्वर्ण रेखा (2022) ''माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव'' आईएसएसएन-2322-0724, अंक-39, जनवरी-मार्च 2022

गारकीआ जेनिफर (2004). डेफिनेसन ऑफ क्रेटिविटी, कैलिफोनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, नॉर्थ्रिज

गेहेन, मनस प्रतिम (7 जून 2017). ''फिरोम 2018, ऑनली एनसीईआरटी टू पब्लिस स्कूल टेस्टबुक''.द् टाइमस आफ इंडिया. रिट्रीव्ड 16 जनवरी 2021

चटर्जी, डॉ. सुनीति कुमार (2002), सिंधी जैन ग्रंथमाला, ग्रंथक 39, लेख का शीर्षक- पंडित डेमोदी विर्चित ''उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण'', भारतीय विद्यभवन.

चबक, ओ. ई. (2017). चैलन्ज इन टीचिंग एण्ड लर्निग स्पीकिंग फॉर स्टूडेन्ट्स. हुमैनिटेरिअन कॉरपस, 1(12), 103-105.

चौरसिया अंकिता (2021), ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियोंमें योगाभ्यास का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' आईजेएचएस 2021;7(2)ः39-41, आईएसएसएनः2395.7476

जोसेफ, रवन्दिमा, (2017). ए स्टडी ऑफ अकादमिक अचीवमेंट ऑफ सैकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेसन टू देयर अचीवमेंट मॉटिवेशन स्टडी हेविट्स एण्ड लर्निग स्टाइल्स इन किगाली सिटी रवाड़ा.

जी. आर. राजू, के.एस. पत्रा, आर. के. आये, डी. डब्लू. एंड खिम, डी. टी. (2018), रिसर्च स्टडीस ऑन हुमन कोगनेटिव एविलिटी, आईएनटी. जे. इन्टेलीजेन्ट डिफेन्स स्पोट सिस्टम, वाल्युम.5, नं. 4, पीपी-298-304.

डॉ. कोठारी डी.एस. (1964-66). द् एजुकेशन कमीशन.

डीवी जॉन (1916). ''डेमोक्रेसी एण्ड एजुकेशन'', ए पेंन स्टेट इलेक्ट्रॉनिक क्लासिस सीरीज पब्लिकेशन.

दुर्मुस एण्ड बॉस (2019) द इफेक्ट ऑफ टीचिंग सोशल स्टडीज कोर्स थ्रू परफार्मिग आट्स ऑन द स्टूडेट्स एकेडेमिक अचीवमेट एड परमेनेन्स ऑफ देयर नॉलेज, एआईएसी, ईजे1219575, आईएसएसएनःईआईएसएसएन-2202-9478, पेज नं.-15.

नेशनल ऐजुकेशनल पॉलिसी, (1986).

नेशनल ऐजुकेशनल पॉलिसी, (2020).

पटेल (2016) "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रुचि का कुछ चरों के संबंध में एक अध्ययन"

इंटरनेशनल इंडेक्सड एण्ड रैफरर्ड जनरल, वाल्यूम. 4,इश्यू-39, पी0पी0-61-65।

पूनम सिंह, डॉ0 छाया श्रीवास्तव (2018) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसपेनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, आईएसएसएनः 2455-4588; एम्पेक्ट फेक्टरः आरजेआईएफ 5.12, वाल्यूम-2, पेज नं. 47-48.

फेरेर, ई.,सेलश्रोस, टी. ए., एमसी अर्दले, जे. जे., स्टेवर्ट, डब्लू. एफ., एण्ड स्वॅटज. बी.एस. (2005) मल्टीवरिऐट मॉडलिंग ऑफ ऐज एण्ड रिटेस्ट इन लॉगिटुडिनल स्टडीस ऑफ कॉगनेटिव ऐविलिटीस. साइकलॉजी एण्ड एगनिंग, 20(3), 412-422.

बलेगिजदेह, एस., एण्ड मोजहेब, एम. ए. (2011). ए प्रॉफाइल ऑफ एन इफेक्टिव ईएफएल ग्रामर टीचर. जर्नल ऑफ लैंग्वेज टीचिंग एण्ड रिसर्च, 2(2), 346-369.

मणिमाला (2018),"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियो की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन" आईजेएसआरएसटी, वॉल्यूम-4, इसू.2, आइेएसएसएनः2395-6011

रजनी रानी (2019), "माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक रुचि का लिंग, क्षेत्र और विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन" आईएसएसएनः 2455-6157 ;एम्पेक्ट फेक्टरः आईजेजेईआर 5.12, वाल्यूम-4, पेज नं. 10-14.

शर्मा योगेश (2017), माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी) आयामें के सन्दर्भ में अध्ययन, इन्टरनेशनल मल्टीडिसपेनरी रिसर्च जर्नल पीवाई- 2017/11/13 वाल्यूम-6

सुधीर पं. (2019), कला समेकित अधिगम, नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

सेलह, लुस्वेती; जैकिंटा, क्वेना और हेलेन, मोंडोह (2018) प्रिडिक्टिव पावर ऑफ कॉग्नेटिव स्टाइल ऑन एकेडमिक परफॉरमेन्स ऑफ स्टूडेंट्स इन सलेक्टिड नेशनल सेकेण्डारी स्कूल इन केन्या, कोजेन्ट साइकोलोजी, रिट्रीवड फिरोम

सोंग, वाई. आई. के. (2018), फोस्टरिंग कल्चरली रेस्पोन्सिव स्कूल: स्टूडेन्ट आइडेन्टिटी डेवलपमेंट इन क्रॉस कल्चरल क्लासरूम, इण्टनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड द आटर्स: 19 (3)

सिंह डॉ. अर्चना (2019), "अनुसूचित जाति एवं सामान्य कोटी के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन" आईएसएसएन ऑनलाइन 2394.5869,आईजेएआर2019;5(5):286-289,एक्सेसेड-22.10.2019।